

بسم الله الرحمن الرحيم والصلوة والسلام على رسول الله وعلى أزواجه واهل واصحابه اجمعين الى يوم الدين

مسئلہ 103, اللہ رب العالمین کی جانب سے رزق کی تقسیم کا سہیہ مسئلہ کیا ہے؟

★ وَمَا مِنْ دَابَّةٍ فِي الْأَرْضِ إِلَّا عَلَى اللَّهِ رِزْقُهَا وَيَعْلَمُ مُسْتَقَرَّهَا وَمُسْتَوْدَعَهَا كُلٌّ فِي كِتَابٍ مُبِينٍ ۝ وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ وَكَانَ عَرْشُهُ عَلَى الْمَاءِ لِيَبْلُوَكُمْ أَيُّكُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا ۚ وَلَئِنْ قُلْتُمْ إِنَّكُمْ مَبْعُوثُونَ مِنْ بَعْدِ الْمَوْتِ لَيَقُولَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ هَذَا إِلَّا سِحْرٌ مُبِينٌ ۝ [سورة هود: آیت نمبر 6 اور 7]

ترجمہ: اور زمین پر چلنے والوں میں کوئی ایسا نہیں جسکی رोजی خدا کے جیمے نہ ہو اور خدا उनके ठिकाने और (मरने के बाद) उनके साथ जाने की जगह (कब्र) को भी जानता है सब कुछ रौशन किताब (लौहे महफूज) में मौजूद है (6) और वह तो वही (कादिर मुत्तलिک) है जिसने आसमानों और ज़मीन को 6 दिन में पैदा किया और (उस वक्त) उसका अर्थ (फलक नहुम) पानी पर था (उसने आसमान व ज़मीन) इस गरज़ से बनाया ताकि तुम लोगों को आजमाए कि तुममें ज्यादा अच्छी कार गुज़ारी वाला कौन है और (ऐ रसूल) अगर तुम (उनसे) कहोगे कि मरने के बाद तुम सबके सब दोबारा (कब्रों से) उठाए जाओगे तो काफ़िर लोग ज़रूर कह बैठेंगे कि ये तो बस खुला हुआ जादू है (7) (सूरह हूद: आयत नंबर 6 और 7)

★ قُلْ أَيْنَكُمْ لَتَكْفُرُونَ بِالَّذِي خَلَقَ الْأَرْضَ فِي يَوْمَيْنِ وَتَجْعَلُونَ لَهُ أَنْدَادًا ذَلِكَ رَبُّ الْعَالَمِينَ ۝ وَجَعَلَ فِيهَا رَوَاسِيَ مِنْ فَوْقِهَا وَبَرَكَ فِيهَا وَقَدَّرَ فِيهَا أَقْوَاتَهَا فِي أَرْبَعَةِ أَيَّامٍ سَوَاءً لِلنَّاسِ لِئْسَاءُ يَلِينِ ۝ [سورة حم السجدة: آیت نمبر 9 اور 10]

ترجمہ: (ऐ रसूल ﷺ) तुम कह दो कि क्या तुम उस (खुदा) से इन्कार करते हो जिसने ज़मीन को दो दिन में पैदा किया और तुम (औरों को) उसका हमसर बनाते हो, यही तो सारे जहाँ का सरपरस्त है (9) और उसी ने ज़मीन में उसके ऊपर से पहाड़ पैदा किए और उसी ने इसमें बरकत अता की और उसी ने एक मुनासिब अन्दाज़ पर इसमें सामाने माईशत का बन्दोबस्त किया (ये सब कुछ) चार दिन में और तमाम तलबगारों के लिए बराबर है (सूरह हा-मीम सज्दा आयत नंबर 9 और 10)

★ وَكَانَ مِنْ دَابَّةٍ لَا تَحْمِلُ رِزْقَهَا ۚ اللَّهُ يَرِزُّهَا وَإِيَّاكُمْ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝ [سورة العنكبوت: آیت نمبر 60]

ترجمہ: और ज़मीन पर चलने वालों में बहुतेरे ऐसे हैं जो अपनी रोजी अपने ऊपर लादे नहीं फिरते खुदा ही उनको भी रोजी देता है और तुम को भी और वह बड़ा सुनने वाला वाक़िफ़कार है (60) (सूरहतुल अनकबूत आयत नंबर 60)

★ وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنْسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ ۝ مَا أَرِيدُ مِنْهُمْ مِنْ رِزْقٍ وَمَا أُرِيدُ أَنْ يُطْعَمُوا ۚ إِنَّ اللَّهَ هُوَ

الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِينِ ۝ [سورة الذاریت: آیت نمبر 56 تا 58]

ترجمہ: और मैंने जिनों और आदमियों को इसी गरज़ से पैदा किया कि वह मेरी इबादत करें (56) न तो मैं उनसे रोजी का तालिब हूँ और न ये चाहता हूँ कि मुझे खाना खिलाएँ (57) खुदा खुद बड़ा रोजी देने वाला ज़ोरावर (और) ज़बरदस्त है (58) (सूरहतुल ज़ारियात आयत नंबर 56 से 58)

★ وَجَعَلْنَا اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ آيَتَيْنِ فَمَحَوْنَا آيَةَ اللَّيْلِ وَجَعَلْنَا آيَةَ النَّهَارِ مُبْصِرَةً لِّتَبْتَغُوا فَضْلًا مِنْ رَبِّكُمْ وَلِتَعْلَمُوا عَدَدَ السِّنِينَ

وَالْحِسَابِ وَكُلُّ شَيْءٍ فَصْلَنَاهُ تَفْصِيلًا ۝ [سورة بنی اسرائیل: آیت نمبر 12]

ترجمہ: और हमने रात और दिन को (अपनी क़दरत की) दो निशानियाँ करार दिया फिर हमने रात की निशानी (चाँद) को धुंधला बनाया और दिन की निशानी (सूरज) को रौशन बनाया (कि सब चीज़ें दिखाई दें) ताकि तुम लोग अपने परवरदिगार का फज़ल ढूँढते फिरों और ताकि तुम बरसों की गिनती और हिसाब को जानो (बूझों) और हमने हर चीज़ को खूब अच्छी तरह तफ़सील से बयान कर दिया है (सूरह बनी इस्राईल आयत नंबर 12)

★ وَخَلَقْنَاكُمْ أَزْوَاجًا ۝ وَجَعَلْنَا نَوْمَكُمْ سُبَاتًا ۝ وَجَعَلْنَا اللَّيْلَ لِبَاسًا ۝ وَجَعَلْنَا النَّهَارَ مَعَاشًا ۝ [سورة النبا: آیت نمبر 8 تا 11]

ترجمہ: और हमने तुम लोगों को जोड़ा जोड़ा पैदा किया (8) और तुम्हारी नींद को आराम (का बाइस) करार दिया (9) और रात को परदा बनाया (10) और हम ही ने दिन को (कसब) मआश (का वक्त) बनाया (11) (सूरह नबा आयत नंबर 8 से 11)

★ وَأَنْ لَّيْسَ لِلْإِنْسَانِ إِلَّا مَا سَعَى ۝ [سورة النجم: آیت نمبر 39]

ترجمہ: और ये कि इन्सान को वही मिलता है जिसकी वह कोशिश करता है (39) (सूरहतुल नज्म आयत नंबर 39)

★ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَنْفِقُوا مِنْ طَيِّبَاتِ مَا كَسَبْتُمْ وَمِمَّا أَخْرَجْنَا لَكُمْ مِنَ الْأَرْضِ وَلَا تَيَمَّمُوا الْخَبِيثَ مِنْهُ تُنْفِقُونَ وَلَسْتُمْ بِأَخِيَاهِ

إِلَّا أَنْ تُغْبِضُوا فِيهِ ۚ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ غَنِيٌّ حَمِيدٌ ۝ الشَّيْطَانُ يَعِدُكُمُ الْفَقْرَ وَيَأْمُرُكُمْ بِالْفَحْشَاءِ ۚ وَاللَّهُ يَعِدُكُمْ مَغْفِرَةً مِنْهُ

وَفَضْلًا ۚ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ۝ [سورة البقرة: آیت نمبر 267 اور 268]

ترجمہ: ऐ ईमान वालों अपनी पाक कमाई और उन चीज़ों में से जो हमने तुम्हारे लिए ज़मीन से पैदा की हैं (खुदा की राह में) खर्च करो और बुरे माल को (खुदा की राह में) देने का क़सद भी न करो हालांकि अगर ऐसा माल कोई तुमको देना चाहे तो तुम अपनी खुशी से उसके लेने वाले नहीं हो मगर ये कि उस (के लेने) में (अमदन) आंख चुराओ और जाने रहो कि खुदा बेशक बेनियाज़ (और) सज़ावारे हम्द है (267) शैतान तमको तंगदस्ती से डराता है और बुरी बात (बुखल) का तुमको हुक़्म करता है और खुदा तुमसे अपनी बख़्शिश और फ़ज़ल (व करम) का वायदा करता है और खुदा बड़ी गुन्जाइश वाला और सब बातों का जानने वाला है (सूरहतुल बकरह आयत नंबर 267 और 268)

★ وَلَنْبَلُوَكُمْ بِشَيْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَالْجُوعِ وَنَقْصٍ مِّنَ الْأَمْوَالِ وَالْأَنْفُسِ وَالثَّمَرَاتِ وَبَشِّرِ الصَّابِرِينَ ۝ الَّذِينَ إِذَا أَصَابَتْهُمُ مُصِيبَةٌ قَالُوا إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ ۝ أُولَٰئِكَ عَلَيْهِمْ صَلَوَاتٌ مِّن رَّبِّهِمْ وَرَحْمَةٌ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُهْتَدُونَ ۝

[سورة البقرة : آیت نمبر 155 تا 157]

ترجمہ: اور ہم تمہیں کچھ خوف اور بھوک سے اور مالوں اور جانوں اور فلوں کی کمی سے جبرر آجڑماہوں اور (آے رسول ﷺ) آےسے سبڑ کرنے والوں کو خورشخبری دے دو (155) کی جب ان پر کوئی موسیبت آا پڑی تو وہ (بےساختا) بول اٹھ ہم تو خدایا ہی کے ہیں اور ہم اسی کی طرف لوٹ کر جانے والے ہیں (156) انہی لوگوں پر انکے پروردگار کی طرف سے اینایتن ہیں اور رهمت اور یہی لوگ ہدایات یافتا ہے (157)

(سورہتول بکرہ آیت نمبر 155 سے 157)

★ مَا أَصَابَ مِنْ مُصِيبَةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي أَنْفُسِكُمْ إِلَّا فِي كِتَابٍ مِّن قَبْلِ أَنْ نَبْرَأَهَا إِنَّ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ۝ لَّكَيْلًا تَأْسَوْا عَلَى مَا فَاتَكُمْ وَلَا تَفْرَحُوا بِمَا آتَاكُمْ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُورٍ ۝ [سورة الحديد : آیت نمبر 22 اور 23]

ترجمہ: جیتنی موسیبتیں رط جڑمین پر اور خدایا تم لوگوں پر ناڑیل ہوتی ہیں (وہ سب) کابل اسیکے کی ہم انہیں پئدا کرے کیتا ب (لوہ مہفڑ) میں (لیخی ہئی) ہیں بےشک یہ خدایا پر آسان ہیں (22) تاکہ جب کوئی چیز تمسے جاتی رہے تو تم اسیکا رنر نہ کیا کرو اور جب کوئی چیز (نہامت) خدایا تمکو دے تو اس پر نہ اترایا کرو اور خدایا کسی اترانے والے یخی باڑ کو دوست نہیں رختا (23) (سورہتول ہدیہ آیت نمبر 23)

★ فَأَمَّا الْإِنْسَانُ إِذَا مَا ابْتَلَاهُ رَبُّهُ فَأَكْرَمَهُ وَنَعَّمَهُ فَيَقُولُ رَبِّي أَكْرَمَنِ ۝ وَأَمَّا إِذَا مَا ابْتَلَاهُ فَقَدَرَ عَلَيْهِ رِزْقَهُ فَيَقُولُ رَبِّي أَهَانَنِ ۝ كَلَّا بَلْ لَا تَكْرُمُونَ الْيَتِيمَ ۝ وَلَا تَحْضُونَ عَلَى طَعَامِ الْمُسْكِينِ ۝ وَتَأْكُلُونَ التُّرَاثَ أَكْلًا

لَّمًّا ۝ وَتُحِبُّونَ الْمَالَ حُبًّا جَمًّا ۝ [سورة الفجر : آیت نمبر 15 تا 20]

ترجمہ: لےکین اینسان جب اسیکو اسیکا پروردگار (اےسے رط) آڑماتا ہے کی اسیکو اڑڑت و نہامت دےتا ہے، تو کھتا ہے کی مے پروردگار نے مڑی اڑڑت دی ہے (15) مگر جب اسیکو (اےسے رط) آڑماتا ہے کی اس پر رڑی کو تنر کر دےتا ہے بول اٹھتا ہے کی مے پروردگار نے مڑی اڑلیل کیا (16) هرگیز نہیں بلیک تم لوگ نہ یتمی کی خاتیرداری کرتے ہو (17) اور نہ مہتاڑ کو خانا خیلانے کی ترگیب دےتے ہو (18) اور میرارا کے مال (هلال و هرام) کو سمے کر چخ جاتے ہو (19) اور مال کو بھوت ہی اڑیڑ رختے ہو (20)

(سورہتول فڑ آیت نمبر 15 سے 20)

★ وَلَوْ بَسَطَ اللَّهُ الرِّزْقَ لِعِبَادِهِ لَبَغَوْا فِي الْأَرْضِ وَلَكِنْ يُنْزِلُ بِقَدَرٍ مَّا يَشَاءُ إِنَّهُ بِعِبَادِهِ خَبِيرٌ بَصِيرٌ ۝ وَهُوَ الَّذِي يُنْزِلُ الْغَيْثَ مِنْ بَعْدِ مَا قَنَطُوا وَيَنْشُرُ رَحْمَتَهُ وَهُوَ الْوَلِيُّ الْحَمِيدُ ۝ وَمِنْ آيَاتِهِ خَلْقُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَثَّ فِيهِمَا مِنْ دَابَّةٍ وَهُوَ عَلَى جَمْعِهِمْ إِذَا يَشَاءُ قَدِيرٌ ۝ وَمَا أَصَابَكُمْ مِنْ مُصِيبَةٍ فَبِمَا كَسَبَتْ أَيْدِيكُمْ وَيَعْفُوا عَنْ كَثِيرٍ ۝ [سورة الشورى : آیت نمبر 27 تا 30]

ترجمہ: اور अगर خدایا نے اپنے بندوں کی رڑی میں فراحی کر دے تو وہ لوگ جبرر (رط) جڑمین سے سرکشی کرنے لگے مگر وہ تو باکردے مونسب جیسکی رڑی (جیتنی) چاھتا ہے ناڑیل کرتا ہے وہ بےشک اپنے بندوں سے خبردار (اور انکو) دےختا ہے (27) اور وہی تو ہے جو لوگوں کے ناظمیہ ہو جانے کے باد مہر بارساتا ہے اور اپنی رهمت (بارش کی برکتوں) کو फैلا دےتا ہے اور وہی کارساز (اور) همد و سنا کے لایک ہے (28) اور اسی کی (کردر کی) نیشانیاں میں سے سارے آاسمان و جڑمین کا پئدا کرنا اور ان جانداروں کا بھی جو اسی نے آاسمان و جڑمین میں फैلا رھے ہیں اور جب چاھے انکے جما کر لےنے پر (بھی) کاदیر ہے (29) اور جو موسیبت تم پر پڑتی ہے وہ تمہارے اپنے ہی हाथों की करतूत से और (उस पर भी) वह बहुत कुछ माफ कर देता है (30) (सुरह तुल शूरा आیت نمبر 27 से 30)

★ ظَهَرَ الْفَسَادُ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ بِمَا كَسَبَتْ أَيْدِي النَّاسِ لِيُذِيقَهُمْ بَعْضَ الَّذِي عَمِلُوا لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ۝ [سورة الروم : آیت نمبر 40 اور 41]

ترجمہ: خدایا وہ (कादिर तवाना है) जिसने तुमको पैदा किया फिर उसी ने रड़ि दी फिर वही तुमको मार डालेगा फिर वही तुमको (दोबारा) ज़िन्दा करेगा भला तुम्हारे (बनाए हुए) खदय के शरीकों में से कोई भी ऐसा है जो इन कामों में से कुछ भी कर सके जिसे ये लोग (उसका) शरीक बनाते हैं (40) वह उससे पाक व पाकीज़ा और बरतर है खदय लोगों ही के अपने हाथों की कारस्तानियों की बदौलत खुशक व तर में फसाद फैल गया ताकि जो कुछ ये लोग कर चुके हैं खदय उन को उनमें से बाड़ करतूतों का मड़ा चखा दे ताकि ये लोग अब भी बाड़ आएँ (41) (सुरह तुल रूम आیت نمبر 40 और 41)

★ أَلْهَكُمُ التَّكَاثُرُ ۝ حَتَّى زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ ۝ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُونَ ۝ ثُمَّ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُونَ ۝ كَلَّا لَوْ تَعْلَمُونَ عِلْمَ الْيَقِينِ ۝ لَتَرَوُنَّ الْجَحِيمَ ۝ ثُمَّ لَتَرَوُنَّهَا عَيْنَ الْيَقِينِ ۝ ثُمَّ لَتَسْأَلَنَّ يَوْمَئِذٍ النَّعِيمَ ۝ [سورة التكاثر Complete]

ترجمہ: कुल व माल की बहुतायत ने तुम लोगों को गाफिल रखा (1) यहाँ तक कि तुम लोगों ने कब्रें देखी (मर गए) (2) देखो तुमको अनकरीब ही मालूम हो जाएगा (3) फिर देखो तुम्हें अनकरीब ही मालूम हो जाएगा (4) देखो अगर तुमको यकीनी तौर पर मालूम होता (तो हरगिज़ गाफिल न होते) (5) तुम लोग ज़रूर दोड़ख को देखोगे (6) फिर तुम लोग यकीनी देखना देखोगे (7) फिर तुमसे नेअमतों के बारे ज़रूर बाड़ पुरस की जाएगी (8) (सुरह अत-तकासुर कम्पलीट)

★ أَفَحَسِبْتُمْ أَمَّا خَلَقْنَاكُمْ عَبَثًا وَأَنْكُمْ إِلَيْنَا لَا تُرْجِعُونَ ۝ فَتَعَلَى اللَّهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيمِ ۝ وَمَنْ يَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ لَا بُرْهَانَ لَهُ بِهِ فَإِنَّمَا حِسَابُهُ عِنْدَ رَبِّهِ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الْكَافِرُونَ ۝ وَقُلْ رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَأَنْتَ خَيْرُ الرَّاحِمِينَ ۝ [سورة المؤمنون : آیت نمبر 115 تا 118]

ترجمہ: तो क्या तुम ये खयाल करते हो कि हमने तुमको (यूँ ही) बेकार पैदा किया और ये कि तुम हमारे हज़ूर में लौटा कर न लाए जाओगे (115) तो खदय जो सच्चा बादशाह (हर चीज़ से) बरतर व आला है उसके सिवा कोई माबूद नहीं (वही) अर्श बुर्जुग का मालिक है (116) और जो शख्स खदय के साथ दूसरे माबूद की भी परसतिश करेगा उसके पास इस शिर्क की कोई दलील तो है नहीं तो बस असाका हिसाब (किताय) उसके असाके परवरदिगार ही के पास होगा (मगर याद रहे कि कुफ़ार हरगिज़ फलाह पाने वाले नहीं) (117) और (आे रसूल) तुम कह दो परवरदिगार तू (मेरी उम्मत को) बखश दे और तरस खा और तू तो सब रهم करने वालों से बेहतर है (118) (सुरह तुल मोमिनून आیت نمبر 115 से 118)

★ وَمَنْ يَتَّقِ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ۖ وَيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ ۚ وَمَنْ يَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ فَهُوَ حَسْبُهُ ۗ إِنَّ اللَّهَ بَالِغُ أَمْرِهِ ۗ

قَدْ جَعَلَ اللَّهُ لِكُلِّ شَيْءٍ قَدْرًا ۝ [سورة الطلاق: آیت نمبر 2 اور 3]

ترجمہ: تو جب یہ اپنا इद्दा पूरा करने के करीब पहुँचे तो या तुम उन्हें उनवाने शाइस्ता से रोक लो या अच्छी तरह रखसत ही कर दो और (तलाक के वक्त) अपने लोगों में से दो आदिलों को गवाह करार दें लो और गवाहों तुम खुदा के वास्ते ठीक ठीक गवाही देना इन बातों से उस शख्स को नसीहत की जाती है जो खुदा और रोजे आखिरत पर ईमान रखता हो और जो खुदा से डरेगा तो खुदा उसके लिए नजात की सुरत निकाल देगा (2) और उसको ऐसी जगह से रिज़क देगा जहाँ से वहम भी न हो और जिसने खुदा पर भरोसा किया तो वह उसके लिए काफी है बेशक खुदा अपने काम को पूरा करके रहता है खुदा ने हर चीज़ का एक अन्दाज़ा मुकर्रर कर रखा है (3) (सुरहतुल तलाक आयत नंबर 2 और 3)

★ اِمَّا اَمْوَالُكُمْ وَاَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ۗ وَاللّٰهُ عِنْدَآ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ۝ فَاتَّقُوا اللّٰهَ مَا اسْتَطَعْتُمْ وَاَطِيعُوا وَاَنْفِقُوا خَيْرًا لَّا نَفْسِكُمْ

وَمَنْ يُؤَقِّ شَخَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝ [سورة التغابن: آیت نمبر 15 اور 16]

ترجمہ: तुम्हारे माल और तुम्हारी औलादे बस आजमाइश है और खुदा के यहाँ तो बड़ा अज़्र (मौजूद) है (15) तो जहाँ तक तुम से हो सके खुदा से डरते रहो और (उसके एहकाम) सुनो और मानों और अपनी बेहतरी के वास्ते (उसकी राह में) खर्च करो और जो शख्स अपने नफ्स की हिरस से बचा लिया गया तो ऐसे ही लोग मुरादें पाने वाले हैं (16) (सुरहतुल तगाबुन आयत नंबर 15 और 16)

★ قُلْ كُلُّ يَّعْمَلْ عَلَى شَاكِلَتِهٖ فَرَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَنْ هُوَ اَهْدٰى سَبِيْلًا ۝ [سورة بنی اسرائیل: آیت نمبر 84]

ترجمہ: (ऐ रसूल ﷺ) तुम कह दो कि हर एक अपने तरीके पर कारगुज़ारी करता है फिर तुम में से जो शख्स बिल्कुल ठीक सीधी राह पर है तुम्हारा परवरदिगार (उससे) खूब वाक्फि है (84) (सूरह बनी इसराइल आयत नंबर 84)

★ لَا يُسْئَلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ يُسْئَلُونَ ۝ [سورة الانبياء: آیت نمبر 23]

ترجمہ: जो कुछ वह (ﷻ) करता है उसकी पूछगछ नहीं हो सकती (23) (सुरहतुल अंबिया आयत नंबर 23)

أَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

मसलह नंबर 104: तक्रदीर का सहीह मसलह और इंसान की पैदाइश का मक़सद क्या है?

★ وَمَا مِنْ دَابَّةٍ فِي الْاَرْضِ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ رِزْقُهَا وَيَعْلَمُ مُسْتَقَرَّهَا وَمُسْتَوْدَعَهَا ۗ كُلٌّ فِي كِتَابٍ مُّبِيْنٍ ۝ ۙ وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ

الَّذِي خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ فِي سِتَّةِ اَيَّامٍ وَكَانَ عَرْشُهُ عَلَى الْمَآءِ لِيَبْلُوَكُمْ اَيْكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا وَلِيْنِ قُلْتَ اِنَّكُمْ

مَبْعُوْتُونَ مِنْۢ بَعْدِ الْمَوْتِ لَيَقُولَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا اِنْ هٰذَا اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝ ۚ [سورة هود: آیت نمبر 6 اور 7]

ترجمह: और ज़मीन पर चलने वालों में कोई ऐसा नहीं जिसकी रोज़ी खुदा के ज़िम्मे न हो और खुदा उनके ठिकाने और (मरने के बाद) उनके सौपे जाने की जगह (क़ब्र) को भी जानता है सब कुछ रौशन किताब (लौहे महफूज़) में मौजूद है (6) और वह तो वही (कादिर मुत्तलिक) है जिसने आसमानों और ज़मीन को 6 दिन में पैदा किया और (उस वक्त) उसका अर्श (फलक नहुम) पानी पर था (उसने आसमान व ज़मीन) इस गरज से बनाया ताकि तुम लोगों को आजमाए कि तुममें ज्यादा अच्छी कार गुज़ारी वाला कौन है और (ऐ रसूल) अगर तुम (उनसे) कहोगे कि मरने के बाद तुम सबके सब दोबारा (क़ब्रों से) उठाए जाओगे तो काफ़िर लोग ज़रूर कह बैठेंगे कि ये तो बस खुला हुआ जादू है (7) (सूरह हूद आयत नंबर 6 और 7)

(1): इंसान की पैदाइश का मक़सद अल्ले की माफ़त और इबादत है लेकिन आजमाइश शर्त है

★ اِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْاَرْضِ زِيْنَةً لِّهَا لِيَبْلُوَهُمْ اَيْهُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ۝ [سورة الكهف: آیت نمبر 7]

ترجمह: और जो कुछ रुए ज़मीन पर है हमने उसकी ज़ीनत (रौनक) करार दी ताकि हम लोगों का इम्तिहान लें कि उनमें से कौन सबसे अच्छा चलन का है (7) (सुरहतुल कहफ आयत नंबर 7)

★ تَبٰرَكَ الَّذِيْ بِيْدِهٖ الْمُلْكُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ ۙ الَّذِيْ خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيٰوةَ لِيَبْلُوَكُمْ اَيْكُمْ اَحْسَنُ

عَمَلًا وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْغَفُوْرُ ۝ [سورة الملک: آیت نمبر 1 और 2]

ترجمह: जिस (खुदा) के कब्ज़े में (सारे जहाँ की) बादशाहत है वह बड़ी बरकत वाला है और वह हर चीज़ पर कादिर है (1) जिसने मौत और ज़िन्दगी को पैदा किया ताकि तुम्हें आजमाए कि तुममें से काम में सबसे अच्छा कौन है और वह ग़ालिब (और) बड़ा बख़शने वाला है (2) (सुरहतुल मुल्क आयत नंबर 1 और 2)

★ اَفَحَسِبْتُمْ اَمَّا خَلَقْنٰكُمْ عَبَثًا وَّاَنَّكُمْ اِلٰیْنَا لَا تُرْجَعُوْنَ ۝ [سورة المومنون: آیت نمبر 115]

ترجمह: तो क्या तुम ये खयाल करते हो कि हमने तुमको (यूँ ही) बेकार पैदा किया और ये कि तुम हमारे हुज़ूर में लौटा कर न लाए जाओगे (सुरहतुल मोमिनून आयत नंबर 1 और 2)

★ وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا لِيَعْبُدُوْنَ ۝ ۙ مَا اُرِيْدُ مِنْهُمْ مِّنْ رِّزْقٍ وَمَا اُرِيْدُ اَنْ يُطِيعُوْنَ ۝ ۙ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ

ترجمہ: اور میں نے (اللہ نے) جنہیں اور آدمیوں کو इसی गरज से पैदा किया कि वह मेरी इबादत करें (56) न तो मैं उनसे रोजी का तालिब हूँ और न ये चाहता हूँ कि मुझे खाना खिलाएँ (57) खुदा खुद बड़ा रोजी देने वाला जोरावर (और) जबरदस्त है (58) (सुरहतुल ज़ारियात आयत नंबर 56 से 58)

★ إِنَّا عَرَضْنَا الْأَمَانَةَ عَلَى السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَالْجِبَالِ فَأَبَيْنَ أَنْ يَحْمِلْنَهَا وَأَشْفَقْنَ مِنْهَا وَحَمَلَهَا الْإِنْسَانُ إِنَّهُ كَانَ ظَلُومًا جَهُولًا ﴿٥٩﴾ لِيُعَذِّبَ اللَّهُ الْمُنَافِقِينَ وَالْمُنَافِقَاتِ وَالْمُشْرِكِينَ وَالْمُشْرِكَاتِ وَيَتُوبَ اللَّهُ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ﴿٦٠﴾

[سورة الاحزاب : آیت نمبر 72 اور 73]

ترجمہ: बेशक हमने (रोजे अज़ल) अपनी अमानत (इताअत इबादत) को सारे आसमान और ज़मीन पहाड़ों के सामने पेश किया तो उन्होंने उसके (बार) उठाने से इन्कार किया और उससे डर गए और आदमी ने उसे (बे ताम्मुल) उठा लिया बेशक इन्सान (अपने हक में) बड़ा ज़ालिम (और) नादान है (72) इसका नतीजा यह हुआ कि खुदा मुनाफिक मर्दों और मुनाफिक औरतों और मुशरिक मर्दों और मुशरिक औरतों को (उनके किए की) सज़ा देगा और ईमानदार मर्दों और ईमानदार औरतों की (तक़सीर अमानत की) तौबा कुबूल फरमाएगा और खुदा तो बड़ा बख़शने वाला मेहरबान है (73) (सुरहतुल अहज़ाब आयत नंबर 72 और 73)

★ وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَيْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَالْجُوعِ وَنَقْصٍ مِّنَ الْأَمْوَالِ وَالْأَنْفُسِ وَالثَّمَرَاتِ وَبَشِّرِ الصَّابِرِينَ ﴿١٥٥﴾ الَّذِينَ إِذَا أَصَابَتْهُمُ مُصِيبَةٌ قَالُوا إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ ﴿١٥٦﴾ أُولَٰئِكَ عَلَيْهِمْ صَلَوَاتٌ مِّن رَّبِّهِمْ وَرَحْمَةٌ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُهْتَدُونَ ﴿١٥٧﴾

[سورة البقرة : آیت نمبر 155 تا 157]

ترجمہ: और हम तुम्हें कुछ खौफ और भूख से और मालों और जानों और फलों की कमी से ज़रूर आजमाएंगे और (ऐ रसूल) ऐसे सब करने वालों को खुशखबरी दे दो (155) कि जब उन पर कोई मुसीबत आ पड़ी तो वह (बेसाख्ता) बोल उठे हम तो खुदा ही के हैं और हम उसी की तरफ लौट कर जाने वाले हैं (156) उन्हीं लोगों पर उनके परवरदिगार की तरफ से इनायतें हैं और रहमत और यही लोग हिदायत याफ़ता हैं (157) (सुरहतुल अहज़ाब आयत नंबर 72 और 73)

★ قُلْ أَغْيَرَ اللَّهُ بَعْضُ رِجَالٍ وَهُوَ رَبُّ كُلِّ شَيْءٍ وَلَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ إِلَّا عَلَيْهَا وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُم مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ﴿١٦٣﴾ وَهُوَ الَّذِي جَعَلَكُمْ خَلَائِفَ الْأَرْضِ وَرَفَعَ بَعْضَكُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجَاتٍ لِّيَبْلُوَكُمْ فِي مَا آتَاكُم إِنَّ رَبَّكَ سَرِيعُ الْعِقَابِ وَإِنَّهُ لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٦٥﴾

[سورة الانعام : آیت نمبر 164 اور 165]

ترجمہ: (ऐ रसूल) तुम पूछो तो कि क्या मैं खुदा के सिवा किसी और को परवरदिगार तलाश करूँ हालाँकि वह तमाम चीजों का मालिक है और जो शख्स कोई बुरा काम करता है उसका (वबाल) उसी पर है और कोई शख्स किसी दूसरे के गुनाह का बोझ नहीं उठाने का फिर तुम सबको अपने परवरदिगार के हुज़ूर में लौट कर जाना है तब तुम लोग जिन बातों में बाहम झगड़ते थे वह सब तुम्हें बता देगा (164) और वही तो वह (खुदा) है जिसने तुम्हें ज़मीन में (अपना) नायब बनाया और तुममें से बाज़ के बाज़ पर दर्जे बुलन्द किये ताकि वो (नेअमत) तुम्हें दी है उसी पर तुम्हारा इमतेहान करे उसमें तो शक ही नहीं कि तुम्हारा परवरदिगार बहुत जल्द अज़ाब करने वाला है और इसमें भी शक नहीं कि वह बड़ा बख़शने वाला मेहरबान है (165) (सुरहतुल अनआम आयत नंबर 164 और 165)

(2) الله ने इंसान की फ़ितरत में ही हक़ और बातिल को पहचानने की सलाहियत रख दी है

★ وَنَفْسٍ وَمَا سَوَّاهَا ﴿٦٠﴾ فَأَلْهَمَهَا فُجُورَهَا وَتَقْوَاهَا ﴿٦١﴾ قَدْ أَفْلَحَ مَن زَكَّاهَا ﴿٦٢﴾ وَقَدْ خَابَ مَن دَسَّاهَا ﴿٦٣﴾ [سورة الشمس : آیت نمبر 7 تا 10]

ترجمہ: और (कसम उस) जान की और जिसने उसे दुरुस्त किया (7) फिर उसकी बदकारी और परहेज़गारी को उसे समझा दिया (8) (कसम है) जिसने उस (जान) को (गनाह से) पाक रखा वह तो कामयाब हुआ (9) और जिसने उसे (गुनाह करके) दबा दिया वह नामुराद रहा (10) (सुरहतुल शम्स आयत नंबर 7 से 10)

★ وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ إِنَّ السَّمْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ أُولَٰئِكَ كَانَ عَنْهُ مَسْئُولًا ﴿٣٦﴾ [سورة بني اسرائيل : آیت نمبر 36]

ترجمہ: और जिस चीज़ का कि तुम्हें यकीन न हो (ख्वाह मा ख्वाह) उसके पीछे न पड़ा करो (क्योंकि) कान और आँख और दिल इन सबकी (क़यामत के दिन) यकीनन बाज़पुर्स होती है (36) (सूरह बनी इसराइल आयत नंबर 36)

★ وَإِذْ أَخَذَ رَبُّكَ مِن بَنِي آدَمَ مِنْ ظُهُورِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَأَشْهَدَهُمْ عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ أَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ قَالُوا بَلَىٰ شَهِدْنَا أَنْ تَقُولُوا يَوْمَ الْقِيَمَةِ إِنَّا كُنَّا عَنْ هَذَا غٰفِلِينَ ﴿١٢٣﴾ أَوْ تَقُولُوا إِنَّمَا أَشْرَكَ آبَاؤُنَا مِن قَبْلُ وَكُنَّا ذُرِّيَّةً مِّن بَعْدِهِمْ أَفَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ الْمُبْطِلُونَ ﴿١٢٤﴾ وَكَذَٰلِكَ نُفَصِّلُ الْآيَاتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿١٢٥﴾ [سورة الاعراف : آیت نمبر 172 تا 174]

ترجمہ: और उसे रसूल ﷺ वह वक्त भी याद (दिलाओ) जब तुम्हारे परवरदिगार ने आदम की औलाद से बस्तियों से (बाहर निकाल कर) उनकी औलाद से खुद उनके मुक़ाबले में एकरार कर लिया (पूछा) कि क्या मैं तुम्हारा परवरदिगार नहीं हूँ तो सब के सब बोले हाँ हम उसके गवाह हैं ये हमने इसलिए कहा कि ऐसा न हो कहीं तुम क़यामत के दिन बोल उठो कि हम तो उससे बिल्कुल बे ख़बर थे (172) या ये कह बैठो कि (हम क्या करें) हमारे तो बाप दादाओं ही ने पहले शिर्क किया था और हम तो उनकी औलाद थे (कि) उनके बाद दुनिया में आए तो क्या हमें उन लोगों के जुर्म की सज़ा में हलाक करेगा जो पहले ही बातिल कर चुके (173) और हम यूँ अपनी आयतों को तफ़सीलदार बयान करते हैं और ताकि वह लोग (अपनी ग़लती से) बाज़ आएँ (174) (सुरहतुल आराफ आयत नंबर 172 से 174)

(3): اللہ نے انسان کی ہدایت کے لیے اپنے انبیاءِ اکرام کو مبعوث فرما کر
ہجرت تمام کر دی ہے

☆ قُلْنَا اهْبِطُوا مِنْهَا جَمِيعًا ۚ فَمَا يَأْتِيَنَّكُمْ مِّنِّي هُدًى فَمَنِ تَبَعَ هُدَايَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ

③۸ وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ③۹ [سورة البقرة: آیت نمبر 38 اور 39]

ترجمہ: (اور جب آدم کو) یہ حکم دیا تھا کہ یہاں سے اتر پڑو (تو بھی کہہ دیا تھا کہ) اگر تمہارے پاس میری طرف سے ہدایت آئے تو (اسکی پیروی کرنا کیونکہ) جو لوگ میری ہدایت پر چلیں گے ان پر (کریامت) میں نہ کوئی خوف ہوگا (38) اور نہ وہ رنجیدہ ہوں گے اور (یہ بھی یاد رکھو) جن لوگوں نے کفر اختیار کیا اور ہماری آیاتوں کو ٹھٹھایا تو وہی جہنمی ہیں اور ہمیشہ دوزخ میں پڑے رہیں گے (سورہ توبہ آیت نمبر 38 اور 39)

☆ قَالَ اهْبِطَا مِنْهَا جَمِيعًا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ فَمَا يَأْتِيَنَّكُمْ مِّنِّي هُدًى فَمَنِ اتَّبَعَ هُدَايَ فَلَا يَضِلُّ وَلَا يَشْقَىٰ ④۰

[سورة طه: آیت نمبر 123]

ترجمہ: پھر انکی توبہ قبول کی اور انکی ہدایت کی فرمایا کہ تم دونوں بہشت سے نیچے اتر جاؤ تو تم میں سے ایک کا ایک دشمن ہے پھر اگر تمہارے پاس میری طرف سے ہدایت پہنچے تو (تم) اسکی پیروی کرنا کیونکہ جو شخص میری ہدایت پر چلے گا نہ تو گمراہ ہوگا اور نہ مصیبت میں پکڑے گا (123) (سورہ طہ آیت نمبر 123)

☆ رُسُلًا مُّبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ لِّئَلَّا يَكُونَ لِلنَّاسِ عَلَى اللَّهِ حُجَّةٌ بَعْدَ الرُّسُلِ وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ④۱ [سورة النساء: آیت نمبر 165]

ترجمہ: اور ہم نے نیک لوگوں کو بہشت کی خوشخبری دینے والے اور بُرے لوگوں کو عذاب سے ڈرانے والے پیغمبر (بجے) تاکہ پیغمبروں کے آنے کے بعد لوگوں کی خُدا پر کوئی حُجَّت باقی نہ رہ جائے اور خُدا تو بڑا جبردارست حکیم ہے (یہ کُفّار نہیں مانتے نہ مانیں) (165) (سورہ نساء آیت نمبر 165)

☆ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُضِلَّ قَوْمًا بَعْدَ إِذْ هَدَاهُمْ حَتَّىٰ يُبَيِّنَ لَهُم مَّا يَتَّقُونَ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ④۲ [سورة التوبة: آیت نمبر 115]

ترجمہ: خُدا کی یہ شان نہیں کہ کسی قوم کو جب انکی ہدایت کر چکا ہو اس کے بعد بے شک خُدا انہیں گمراہ کر دے (یہاں تک) کہ وہ انہیں چیزوں کو بتا دے جس سے وہ پرہیز کریں بے شک خُدا ہر چیز سے (واکف ہے) (115) (سورہ توبہ آیت نمبر 115)

☆ مَنِ اهْتَدَىٰ فَإِنَّمَا يَهْتَدِي لِنَفْسِهِ ۚ وَمَنْ ضَلَّٰ فَإِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۚ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ ۚ وَمَا كُنَّا

مُعَذِّبِينَ حَتَّىٰ نَبْعَثَ رَسُولًا ④۳ [سورة بني اسرائيل: آیت نمبر 15]

ترجمہ: جو شخص سیدھے رہتا ہے تو بس اپنے فائدے کے لیے یہی کرتا ہے اور جو شخص گمراہ ہوتا ہے تو اس نے بھٹک کر اپنا آپ بیگاڑا اور کوئی شخص کسی دوسرے (کے گناہ) کا بوجھ اپنے سر پر نہیں لے گا اور ہم تو جب تک رسول کو بھیج کر تمام ہجرت نہ کر لیں کسی پر عذاب نہیں کیا کرتے (15) (سورہ بنی اسرائیل آیت نمبر 15)

☆ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَتْكُم مَّوْعِظَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ وَشِفَاءٌ لِّمَا فِي الصُّدُورِ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ ④۴ قُلْ بِفَضْلِ اللَّهِ

وَبِرَحْمَتِهِ فَبِذَلِكَ فَلْيَفْرَحُوا ۖ هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُونَ ④۵ [سورة يونس: آیت نمبر 57 اور 58]

ترجمہ: لوگو! تمہارے پاس تمہارے پروردگار کی طرف سے نصیحت (کتابِ خُدا آ چکی اور جو (مَرَج شِرکِ وگورہ) دِل میں ہیں انکی دوا اور اِیمان والوں کے لیے ہدایت اور رحمت (57) (اے رسول) تم کہ دو کہ (یہ کُراں) خُدا کے فضل و کرم اور اسکی رحمت سے تمکو ملا ہے (ہی) تو ان لوگوں کو اس پر خوش ہونا چاہیے (58) (سورہ یونس آیت نمبر 57 اور 58)

(4) اللہ نے انسان کو حَق اور باطل دونوں کو قبول یا رد کرنے کا اختیار بھی
دے دیا ہے

☆ هَلْ أَتَى عَلَى الْإِنْسَانِ حِينٌ مِّنَ الدَّهْرِ لَمْ يَكُنْ شَيْئًا مَّذْكُورًا ① إِنَّا خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ نُطْفَةٍ أَمْشَاجٍ

نَبْتَلِيهِ فَجَعَلْنَاهُ سَمِيعًا بَصِيرًا ② إِنَّا هَدَيْنَاهُ السَّبِيلَ إِمَّا شَاكِرًا وَإِمَّا كَفُورًا ③ [سورة الدھر: آیت نمبر 1 تا 3]

ترجمہ: بے شک انسان پر ایک ایسا وقت آ چکا ہے کہ وہ کوئی چیز کا بیلہ جیکر نہ تھا (1) ہم نے انسان کو مخلوقِ نطفہ سے پیدا کیا کہ اسے آزمائے تو ہم نے اسے سُنّتا دیکھتا بنایا (2) اور اسکو راستا بھی دیکھا دیا (اب وہ) خواہ شکر گزار ہو خواہ ناشکرا (3) (سورہ دھر آیت نمبر 1 سے 3)

☆ وَالَّذِينَ جَاهَدُوا فِينَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا ۚ وَإِنَّ اللَّهَ لَبَعَّ الْهُسَيْنِ ④ [سورة العنكبوت: آیت نمبر 69]

ترجمہ: اور جن لوگوں نے ہماری راہ میں جہاد کیا انہیں ہم ضرور اپنی راہ کی ہدایت کریں گے اور اس میں شک نہی کہ خُدا نیکوکاروں کا ساتھی ہے (69) (سورہ عنکبوت آیت نمبر 69)

☆ وَأَن لَّيْسَ لِلْإِنْسَانِ إِلَّا مَا سَعَىٰ ⑤ [سورة النجم: آیت نمبر 39]

ترجمہ: اور یہ کہ انسان کو وہی ملتا ہے جسکی وہ کوشش کرتا ہے (39) (سورہ نجم آیت نمبر 39)

★ مَنْ كَانَ يُرِيدُ الْعَاجِلَةَ عَجَّلْنَا لَهُ فِيهَا مَا نَشَاءُ لِمَنْ نُرِيدُ ثُمَّ جَعَلْنَا لَهُ جَهَنَّمَ يَصْلَاهَا مَذْمُومًا مَدْحُورًا ۝۱۸ وَمَنْ

أَرَادَ الْآخِرَةَ وَسَعَىٰ لَهَا سَعْيَهَا وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَأُولَٰئِكَ كَانَ سَعْيُهُمْ مَشْكُورًا ۝۱۹ [سورة بنی اسرائیل : 18 اور 19]

ترجمہ: (اور گواہ یاہید کی جڑرت نہیں) اور جو شخّش دنیا کا خواہاں ہو تو ہم جسے چاہتے اور جو چاہتے ہیں اسی دنیا میں سیردست (فائر) اسے اتا کرتے ہیں (مگر) फिर हमने उसके लिए तो जहन्नूम ठहरा ही रखा है कि वह उसमें बुरी हालत से रौंदा हुआ दाखिल होगा (18) और जो शख़श आखिर का मुतमइनी हो और उसके लिए खूब जैसी चाहिए कोशिश भी की और वह ईमानदार भी है तो यही वह लोग हैं जिनकी कोशिश मक़बूल होगी (19) (सुरहतुल बनी इसराइल आयत नंबर 18 और 19)

★ مَنْ كَانَ يُرِيدُ حَرْثَ الْآخِرَةِ نَزِدْ لَهُ فِي حَرْثِهِ ۚ وَمَنْ كَانَ يُرِيدُ حَرْثَ الدُّنْيَا نُؤْتِهِ مِنْهَا وَمَا لَهُ فِي الْآخِرَةِ

مِنْ نَّصِيبٍ ۝۲۰ [سورة الشورى : آیت نمبر 20]

ترجمہ: जो शख़श आखिरत की खेती का तालिब हो हम उसके लिए उसकी खेती में अफ़ज़ाइश करेंगे और दुनिया की खेती का खास्तगार हो तो हम उसको उसी में से देंगे मगर आखिरत में फिर उसका कुछ हिस्सा न होगा (20) (सुरहतुल शूरा आयत नंबर 20)

★ فَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَقُولُ رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا ۖ وَمِنْهُمْ مَنْ يَقُولُ رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا

حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ۝۲۱ أُولَٰئِكَ لَهُمْ نَصِيبٌ مِّمَّا كَسَبُوا ۖ وَاللَّهُ سَرِيعُ

الْحِسَابِ ۝۲۲ [سورة البقرة : آیت نمبر 200 تا 202]

ترجمہ: फिर जब तुम अरक़ाने हज बजा ला चुको तो तुम इस तरह ज़िक्रे खुदा करो जिस तरह तुम अपने बाप दादाओं का जिक्र करते हो बल्कि उससे बढ़ कर के फिर बाज़ लोग ऐसे हैं जो कहते हैं कि ऐ मेरे परवरदिगार हमको जो (देना है) दुनिया ही में दे दे हालांकि (फिर) आखिरत में उनका कुछ हिस्सा नहीं (201) और बाज़ बन्दे ऐसे हैं कि जो दुआ करते हैं कि ऐ मेरे पालने वाले मुझे दुनिया में नेअमत दे और आखिरत में सवाब दे और दोज़ख की बाग से बचा (202) (सुरहतुल बकरह आयत नंबर 200 से 202)

(5): शैतान का इंसान पर कोई ज़ोर नहीं चल सकता वो तो सिर्फ बुराई की दावत ही दे सकता है

ترجمہ:

★ يَبْنِي آدَمَ لَا يَفْتِنَنَّكُمُ الشَّيْطَانُ كَمَا أَخْرَجَ أَبَوَيْكُمُ مِنَ الْجَنَّةِ يَنْزِعُ عَنْهُمَا لِبَاسَهُمَا لِيُرِيَهُمَا

سَوَآتِهِمَا إِنَّهُ يَرَاكُمْ هُوَ وَقَبِيلُهُ مِنْ حَيْثُ لَا تَرَوْنَهُمْ ۚ إِنَّا جَعَلْنَا الشَّيَاطِينَ أَوْلِيَاءَ لِلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ ۝۲۴

[سورة الاعراف : آیت نمبر 27]

ترجمہ: ताकि लोग नसीहत व इबरत हासिल करें ऐ औलादे आदम (होशियार रहो) कहीं तुम्हें शैतान बहका न दे जिस तरह उसने तुम्हारे बाप माँ आदम व हव्वा को बेहशत से निकलवा छोड़ा उसी ने उन दोनों से (बेहशती) पोशाक उतरवाई ताकि उन दोनों को उनकी शर्मगाहें दिखा दे वह और उसका कुनबा ज़रूर तुम्हें इस तरह देखता रहता है कि तुम उन्हे नहीं देखने पाते हमने शैतानों को उन्हीं लोगों का रफीक़ करार दिया है (27) (सुरहतुल आराफ आयत नंबर 27)

★ وَقَالَ الشَّيْطَانُ لَهَا قُصِي الْأَمْرُ إِنَّ اللَّهَ وَعَدَكُمْ وَعْدَ الْحَقِّ ۖ وَعَدْتُكُمْ فَأَخْلَفْتُكُمْ ۖ وَمَا كَانَ لِي عَلَيْكُمْ مِنْ سُلْطَانٍ

إِلَّا أَنْ دَعَوْتُكُمْ فَاسْتَجَبْتُمْ لِي ۖ فَلَا تَلُومُونِي وَلُومُوا أَنْفُسَكُمْ ۚ مَا أَنَا بِمُصْرِخِكُمْ وَمَا أَنْتُمْ بِمُصْرِخِي ۚ إِنِّي كَفَرْتُ

بِمَا أَشْرَكْتُكُمْ مِنْ قَبْلُ ۚ إِنَّ الظَّالِمِينَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝۲۵ وَأُدْخِلَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ

تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا بِإِذْنِ رَبِّهِمْ ۖ تَحِيَّتُهُمْ فِيهَا سَلَامٌ ۝۲۶ [سورة ابراهيم : 22 اور 23]

ترجمہ: और जब (लोगों का) खैर फैसला हो चुकेगा (और लोग शैतान को इल्ज़ाम देंगे) तो शैतान कहेगा कि खुदा ने तुम से सच्चा वायदा किया था (तो वह पूरा हो गया) और मैंने भी वायदा तो किया था फिर मैंने वायदा खिलाफ़ी की और मुझे कुछ तुम पर हुक्मत तो थी नहीं मगर इतनी बात थी कि मैंने तुम को (बुरे कामों की तरफ) बुलाया और तुमने मेरा कहा मान लिया तो अब तुम मुझे बुरा (भला) न कहो बल्कि (अगर कहना है तो) अपने नफ्स को बुरा कहो (आज) न तो मैं तुम्हारी फरियाद को पहुँचा सकता हूँ और न तुम मेरी फरियाद कर सकते हो मैं तो उससे पहले ही बेज़ार हूँ कि तुमने मुझे (खुदा का) शरीक बनाया बेशक जो लोग नाफरमान हैं उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है (22) और जिन लोगों ने (सदक़ दिल से) ईमान कुबूल किया और अच्छे (अच्छे) काम किए वह (बेहशत के) उन बागों में दाखिल किए जाएंगे जिनके नीचे नहरे जारी होगी और वह अपने परवरदिगार के हुक्म से हमेशा उसमें रहेंगे वहाँ उन (की मुलाक़ात) का तोहफा सलाम का हो (23) (सुरहतुल इब्राहीम आयत नंबर 22 और 23)

(6): इंसान खुद ही हक और बातिल को इख्तियार कर के الله की रहमत या अज़ाब का मुस्ताहिक़ होता है

★ فَذَكِّرْ إِن نَّفَعَتِ الذِّكْرَى ۖ سَيَذَكَّرُ مَنْ يَخْشَى ۖ ۝۹ وَيَتَجَنَّبُهَا الْأَشْقَى ۖ ۝۱۰ الَّذِي يَصْلَى النَّارَ الْكُبْرَى ۖ ۝۱۱ ثُمَّ

لَا يَمُوتُ فِيهَا وَلَا يَحْيَى ۖ ۝۱۲ [سورة الاعلى : آیت نمبر 9 تا 13]

ترجمہ: तो जहाँ तक समझाना मुफ़ीद हो समझते रहो (9) जो खौफ रखता हो वह तो फौरी समझ जाएगा (10) और बदबख्त उससे पहलू तही करेगा (11) जो (क़यामत में) बड़ी (तेज़) आग में दाखिल होगा (12) फिर न वहाँ मरेगा ही न जीयेगा (13) (सुरहतुल आला आयत नंबर 9 से 13)

☆ نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَقُولُونَ وَمَا أَنْتَ عَلَيْهِمْ بِجَبَّارٍ فَذَكَرَ بِالْقُرْآنِ مَنْ يَخَافُ وَعِيدِ ﴿٤٥﴾ [سورة ق: آیت نمبر 45]

ترجمہ: اور ہم پر بہت آسان ہے (اے رسول) یہ لوگ جو کچھ کہتے ہیں ہم (اسے) خوب جانتے ہیں اور تم ان پر جب تو دیتے نہیں ہو تو جو ہمارے (عجائب کے) وعدے سے ڈرے اسکو تم کوران کے زریعہ نسیہت کرتے رہو (45) (سورہ قاف آیات نمبر 45)

☆ إِنْ تَكْفُرُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَنِيٌّ عَنْكُمْ وَلَا يَرْضَىٰ لِعِبَادِهِ الْكُفْرَ وَإِنْ تَشْكُرُوا يَرْضَهُ لَكُمْ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ

أُخْرَىٰ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُمْ مَرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿٤٦﴾ [الزمر: آیت نمبر 7]

ترجمہ: اگر تم نے اسکی ناشکری کی تو (یاد رکھو کہ) خدا تم سے بیکلکل بے پروا ہے اور اپنے بندوں سے کفر اور ناشکری کو پسند نہیں کرتا اور اگر تم شکر کرو گے تو وہ اسکو تمہارے واسطے پسند کرتا ہے اور (قیامت میں) کوئی کسی (کے گناہ) کا بوجھ (اپنی گردن پر) نہیں اٹھاے گا پھر تمکو اپنے پروردگار کی طرف لوٹنا ہے تو (دنیا میں) جو کچھ (بلا بُرا) کرتے تھے وہ تمہیں بتا دے گا وہ یقیناً دلوں کے راز (تک) سے خوب واقف ہے (7) (سورہ اجم-زمر آیات نمبر 7)

☆ مَا يَفْعَلُ اللَّهُ بِعَذَابِكُمْ إِنْ شَكَرْتُمْ وَآمَنْتُمْ وَكَانَ اللَّهُ شَاكِرًا عَلِيمًا ﴿١٤٧﴾ [سورة النساء: آیت نمبر 147]

ترجمہ: اگر تم نے خدا کا شکر کیا اور اسپر ایمان لایا تو خدا تم پر عجاوب کرکے کیا کرے گا بلکہ خدا تو (خود شکر کرنے والوں کا) کدر دال اور واقفکار ہے (147) (سورہ نساء آیات نمبر 147)

☆ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا يُنَادُونَ لِمَقْتُ اللَّهِ أَكْبَرُ مِنْ مَّقْتِكُمْ أَنْفُسَكُمْ إِذْ تُدْعَوْنَ إِلَى الْإِيمَانِ فَتَكْفُرُونَ ﴿١٠﴾ قَالُوا رَبَّنَا أَمَتْنَا اثْنَتَيْنِ وَأَحْيَيْتَنَا اثْنَتَيْنِ فَاعْتَرَفْنَا بِذُنُوبِنَا فَهَلْ إِلَىٰ خُرُوجٍ مِنْ سَبِيلٍ ﴿١١﴾ ذَلِكُمْ بِأَنَّهُ إِذَا دُعِيَ اللَّهُ وَحْدَهُ كَفَرْتُمْ وَإِنْ يُشْرَكَ بِهِ تُؤْمِنُونَ فَالْحُكْمُ لِلَّهِ الْعَلِيِّ الْكَبِيرِ ﴿١٢﴾ [البقرة: آیت 10 تا 12]

ترجمہ: (آدمی کی اولاد میں) یہی لوگ سچے وارث ہیں (10) جو بہشت باری کا حصہ لیں گے (اور) یہی لوگ اس میں ہمیشہ (جیندا) رہیں گے (11) اور ہم نے آدمی کو گیلی میڈی کے جواہر سے پیدا کیا (12) (سورہ مومن آیات نمبر 10 سے 12)

☆ وَيَوْمَ يَعْضُ الظَّالِمُ عَلَىٰ يَدَيْهِ يَقُولُ يَلَيْتَنِي اتَّخَذْتُ مَعَ الرَّسُولِ سَبِيلًا ﴿٢٧﴾ يُوَيْلَتِي لَيْتَنِي لَمْ أَتَّخِذْ فُلَانًا خَلِيلًا ﴿٢٨﴾ لَقَدْ أَضَلَّنِي عَنِ الذِّكْرِ بَعْدَ إِذْ جَاءَنِي وَكَانَ الشَّيْطَانُ لِلْإِنْسَانِ خَذُولًا ﴿٢٩﴾ وَقَالَ

الرَّسُولُ يَرْبِّ إِنِّي قَوْمِي اتَّخَذُوا هَذَا الْقُرْآنَ مَهْجُورًا ﴿٣٠﴾ [سورة الفرقان: آیت نمبر 27 تا 30]

ترجمہ: اور جس دن ظالم نے اپنے ہاتھ (مارے افسوس کے) کاٹنے لگے گا اور کہے گا کاش رسول کے ساتھ میں بھی (دین کا سیدھا) راستہ پکڑتا (27) ہاں افسوس کاش میں فلا شخص کو اپنا دوست نہ بناتا (28) بے شک یقیناً اس نے ہمارے پاس نسیہت آنے کے بعد مجھے بہکا دیا اور شیطاں نے آدمی کو رستہ کرنے والا ہی ہے (29) اور (اس وقت) رسول (بارگاہِ خداوندی میں) ارج کرے گا کہ اے میرے پروردگار میری قوم نے تو اس کوران کو بے کار بنا دیا (30) (سورہ فرقان آیات نمبر 27 سے 30)

☆ إِذَا الْقُورَ فِيهَا سَمِعُوا لَهَا شَهِيقًا وَهِيَ تَفُورُ ﴿٢٧﴾ تَكَادُ تَمَيَّزُ مِنَ الْغَيْظِ كُلًّا أَلْقَىٰ فِيهَا فَوْجٌ سَأَلَهُمْ خَزَنَتُهَا أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَذِيرٌ ﴿٢٨﴾ قَالُوا بَلَىٰ قَدْ جَاءَنَا نَذِيرٌ فَكَذَّبْنَا وَقُلْنَا مَا نَزَّلَ اللَّهُ مِنْ شَيْءٍ إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا فِي ضَلَالٍ كَبِيرٍ ﴿٢٩﴾ وَقَالُوا لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ أَوْ نَعْقِلُ مَا كُنَّا فِي أَصْحَابِ السَّعِيرِ ﴿٣٠﴾ فَاعْتَرَفُوا بِذُنُوبِهِمْ فَسُحْقًا لِأَصْحَابِ السَّعِيرِ ﴿٣١﴾ إِنَّ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُم بِالْغَيْبِ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَبِيرٌ ﴿٣٢﴾ [سورة الملک: آیت نمبر 7 تا 12]

ترجمہ: جب یہ لوگ اس میں ڈالے جائیں گے تو اسکی بڑی چیخ سنیں گے اور وہ جوش مار رہی ہوگی (27) بلکہ گویا مارے جوش کے فٹ پڑے گی جب اس میں (انکا) کوئی گروہ ڈالا جائے گا تو ان سے داریوں جہنم پھیلے گا کیا تمہارے پاس کوئی ڈرانے والا پیغمبر نہیں آیا تھا (8) وہ کہیں گے ہاں ہمارے پاس ڈرانے والا تو ضرور آیا تھا مگر ہم نے اسکو ڈھٹلا دیا اور کہا کہ خدا نے تو کچھ ناجیل ہی نہیں کیا تو ہم تو بڑی (گہری) گمراہی میں (پڑے) ہو (9) اور (یہ بھی) کہیں گے کہ اگر (انکی بات) سن لیں یا سمجھ لیں تب تو (آج) دوزخیوں میں نہ ہوتے (10) مگر وہ اپنے گناہ کا اقرار کر لیں گے تو دوزخیوں کو خدا کی رحمت سے دور ہے (11) بے شک جو لوگ اپنے پروردگار سے بے خوف ہوں گے ان کے لیے مغفرت اور بڑا باری عجز ہے (12) (سورہ ملک آیات نمبر 7 سے 12)

(7): (7) اِس وَکَـتِ تَکْ اِنْسَانِ کُوْ غُمَرَاهُ نَہِیْ کَرْتَا جَبْ تَکْ اِنْسَانِ خُودِ اِپْنِے لِیْے غُمَرَاهِیْ نَ کَمَا لَے

☆ إِنَّ اللَّهَ لَا يَسْتَحْيِي أَنْ يَضْرِبَ مَثَلًا مَّا بَعُوضَةً فَمَا فَوْقَهَا ۚ فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا فَيَعْلَمُونَ أَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَبِّهِمْ ۚ وَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا فَيَقُولُونَ مَاذَا أَرَادَ اللَّهُ بِهَذَا مَثَلًا ۚ يُضِلُّ بِهِ كَثِيرًا ۚ وَيَهْدِي بِهِ كَثِيرًا ۚ وَمَا يُضِلُّ بِهِ إِلَّا الْفَاسِقِينَ ﴿٣٣﴾ الَّذِينَ يَنْقُضُونَ عَهْدَ اللَّهِ مِنْ بَعْدِ مِيثَاقِهِ ۚ وَيَقْطَعُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ بِهِ أَنْ يُوصَلَ وَيُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ ﴿٣٤﴾ [سورة البقرة: آیت نمبر 26 اور 27]

8 **तर्जुमा:** बेशक खुदा मच्छर या उससे भी बड़कर (हकीर चीज़) की कोई मिसाल बयान करने में नहीं झंपता पस जो लोग ईमान ला चुके हैं वह तो ये यकीन जानते हैं कि ये (मिसाल) बिल्कुल ठीक है और ये परवरदिगार की तरफ़ से है (अब रहे) वह लोग जो काफ़िर हैं पस वह बोल उठते हैं कि खुदा का उस मिसाल से क्या मतलब है, ऐसी मिसाल से खुदा बहुतेरों की हिदायत करता है मगर गुमराही में छोड़ता भी है तो ऐसे बदकारों को (26) जो लोग खुदा के एहदो पैमान को मज़बूत हो जाने के बाद तोड़ डालते हैं और जिन (ताल्लुकात) का खुदा ने हुक्म दिया है उनको क़ताआ कर देते हैं और मुल्क में फ़साद करते फिरते हैं, यही लोग घाटा उठाने वाले हैं (27) (सुरहतुल बकरह आयत नंबर 26 और 27)

★ وَلَقَدْ ذَرَأْنَا لِجَهَنَّمَ كَثِيرًا مِّنَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ لَهُمْ قُلُوبٌ لَا يَفْقَهُونَ بِهَا وَلَهُمْ أَعْيُنٌ لَا يُبْصِرُونَ بِهَا

وَلَهُمْ آذَانٌ لَا يَسْمَعُونَ بِهَا أُولَٰئِكَ كَالْأَنْعَامِ بَلْ هُمْ أَضَلُّ أُولَٰئِكَ هُمُ الْغَافِلُونَ ﴿١٧٩﴾ [الاعراف: آیت نمبر 179]

तर्जुमा: और गोया हमने (खुदा) बहुतेरे जिन्नात और आदमियों को जहन्नम के वास्ते पैदा किया और उनके दिल तो हैं (मगर कसदन) उन से देखते ही नहीं और उनके कान भी हैं (मगर) उनसे सुनने का काम ही नहीं लेते (खुलासा) ये लोग गोया जानवर हैं बल्कि उनसे भी कहीं गए गुज़रे हुए यही लोग (अमूर हक़) से बिल्कुल बेख़बर हैं (179) (सूरह अल-आराफ़ आयत नंबर 179)

★ وَنُقَلِّبُ أَفْئِدَتَهُمْ وَأَبْصَارَهُمْ كَمَا لَمْ يُؤْمِنُوا بِهِ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَنَذَرُهُمْ فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ﴿١٨٠﴾ وَلَوْ أَنَّنَا نَزَّلْنَا إِلَيْهِمُ الْمَلَكَةَ وَكَلَّمَهُمُ الْمَوْتَى وَحَشَرْنَا عَلَيْهِمْ كُلَّ شَيْءٍ قُبُلًا مَا كَانُوا لِيَوْمٍ مِّنْهُ إِلَّا أَن يَشَاءَ اللَّهُ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ يَجْهَلُونَ ﴿١٨١﴾

[سورة الانعام : 110 اور 111]

तर्जुमा: और हम उनके दिल और उनकी आँखें उलट पलट कर देंगे जिस तरह ये लोग कुरान पर पहली मरतबा ईमान न लाए और हम उन्हें उनकी सरकशी की हालत में छोड़ देंगे कि सरगिरदाँ (परेशान) रहें (110) और (ऐ रसूल सच तो ये है कि) हम अगर उनके पास फरिश्ते भी नाज़िल करते और उनसे मुर्दे भी बातें करने लगते और तमाम (मख़फ़ी(छुपी)) चीज़ें (जैसे जन्नत व नार वगैरह) अगर वह गिरोह उनके सामने ला खड़े करते तो भी ये ईमान लाने वाले न थे मगर जब अल्लाह चाहे लेकिन उनमें के अक्सर नहीं जानते (111) (सूरह अनआम आयत नंबर 110 और 111)

★ ذَلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ لَمْ يَكُ مُغَيِّرًا نِّعْمَةً أَنْعَمَهَا عَلَىٰ قَوْمٍ حَتَّىٰ يُغَيِّرُوا مَا بِأَنْفُسِهِمْ وَأَنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٥٣﴾ [سورة الانفال : آیت نمبر 53]

तर्जुमा: ये सज़ा इस वजह से (दी गई) कि जब कोई नेअमत खुदा किसी क़ौम को देता है तो जब तक कि वह लोग खुद अपनी कलबी हालत (न) बदलें खुदा भी उसे नहीं बदलेगा और खुदा तो यकीनी (सब की सुनता) और सब कुछ जानता है (53) (सुरहतुल अनफ़ाल आयत नंबर 53)

★ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اسْتَجِيبُوا لِلَّهِ وَلِلرَّسُولِ إِذَا دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيكُمْ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَحُولُ بَيْنَ الْمَرْءِ وَقَلْبِهِ وَأَنَّهُ إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ﴿٢٤٧﴾ وَاتَّقُوا فَتْنَةً لَا تُصِيبَنَّ الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْكُمْ خَاصَّةً وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿٢٤٨﴾

[سورة الانفال : 24 اور 25]

तर्जुमा: ऐ ईमानदार जब तुम को हमारा रसूल (मोहम्मद) ऐसे काम के लिए बुलाए जो तुम्हारी रूहानी ज़िन्दगी का बाइस हो तो तुम खुदा और रसूल ﷺ के हुक्म दिल से कुबूल कर लो और जान लो कि खुदा वह क़ादिर मुतलिक है कि आदमी और उसके दिल (इरादे) के दरमियान इस तरह आ जाता है और ये भी समझ लो कि तुम सबके सब उसके सामने हाज़िर किये जाओगे (24) और उस फितने से डरते रहो जो ख़ास उन्हीं लोगों पर नही पड़ेगा जिन्होंने तुम में से जुल्म किया (बल्कि तुम सबके सब उसमें पड़ जाओगे) और यकीन मानो कि खुदा बड़ा सख्त अज़ाब करने वाला है (25) (सुरहतुल अनफ़ाल आयत नंबर 24 और 25)

★ سَأَصْرِفُ عَنْ آيَتِيَ الَّذِينَ يَتَكَبَّرُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَإِنْ يَرَوْا كَلَّ آيَةٍ لَا يُؤْمِنُوا بِهَا وَإِنْ يَرَوْا سَبِيلَ الرُّشْدِ لَا يَتَّخِذُوهُ سَبِيلًا وَإِنْ يَرَوْا سَبِيلَ الْغَيِّ يَتَّخِذُوهُ سَبِيلًا ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَكَانُوا عَنْهَا غَافِلِينَ ﴿٣٧﴾

तर्जुमा: जो लोग (खुदा की) ज़मीन पर नाहक़ अकड़ते फिरते हैं उनको अपनी आयतों से बहुत जल्द फेर दूंगा और मैं क्या फेरूंगा खुदा (उसका दिल ऐसा सख्त है कि) अगर दुनिया जहाँ के सारे मौजिज़े भी देखते तो भी ये उन पर ईमान न लाएंगे और (अगर) सीधा रास्ता भी देख पाएंगे तो भी अपनी राह न जाएंगे और अगर गुमराही की राह देख लेंगे तो झटपट उसको अपना तरीका बना लेंगे ये कजरवी इस सबब से हुई कि उन लोगों ने हमारी आयतों को झुठला दिया और उनसे ग़फलत करते रहे (146) (सुरहतुल आराफ़ आयत नंबर 146)

(8) : الله ने कुरआन हकीम में इंसान को हमेशा की कामयाबी का मयार बिलकुल खोल कर बयान फरमा दिया है

أَفَغَيْرَ دِينِ اللَّهِ يَبِغُونَ وَلَهُ أَسْلَمَ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ طَوْعًا وَكَرْهًا وَإِلَيْهِ يُرْجَعُونَ ﴿٨٣﴾ قُلْ آمَنَّا بِاللَّهِ وَمَا أُنْزِلَ عَلَيْنَا وَمَا أُنْزِلَ عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَالْأَسْبَاطِ وَمَا أُوتِيَ مُوسَىٰ وَعِيسَىٰ وَالنَّبِيُّونَ مِنْ رَبِّهِمْ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِنْهُمْ وَنَحْنُ لَهُ مُسْلِمُونَ ﴿٨٤﴾ وَمَنْ يَبْتَغِ غَيْرَ الْإِسْلَامِ دِينًا فَلَنْ يُقْبَلَ مِنْهُ وَهُوَ فِي الْآخِرَةِ مِنَ الْخَاسِرِينَ ﴿٨٥﴾

तर्जुमा: तो क्या ये लोग खुदा के दीन के सिवा (कोई और दीन) ढूँढते हैं हालाँकि जो (फ़रिश्ते) आसमानों में हैं और जो (लोग) ज़मीन में हैं सबने खुशी खुशी या ज़बरदस्ती उसके सामने अपनी गर्दन डाल दी है और (आखिर सब) उसकी तरफ़ लौट कर जाएंगे (83) (ऐ रसूल उन लोगों से) कह दो कि हम तो खुदा पर ईमान लाए और जो किताब हम पर नाज़िल हुई और जो (सहीफ़े) इबराहीम और इस्माईल और इसहाक़ और याक़ूब और औलादे उनके परवरदिगार की तरफ़ से इनायत हुई (सब पर ईमान लाए) हम तो उनमें से किसी एक में भी फ़र्क़ नहीं करते (84) और हम तो उसी (यकता खुदा) के फ़रमाबरदार हैं और जो शख्स इस्लाम के सिवा किसी और दीन की ख्वाहिश करे तो उसका वह दीन हरगिज़ कुबूल ही न किया जाएगा और वह आखिरत में सख्त घाटे में रहेगा (85) (सूरह अल-इमरान आयत नंबर 83 से 85)

ترجمہ: (37) (سورہ قاف آیات نمبر 37) (37) اس میں ذکر نہیں ہے کہ جو شخص (آگاہ) دل رکھتا ہے یا کان لگا کر ہنجرے کلب سے سنا ہے اس کے لیے اس میں (کافی) نسیہت ہے

ترجمہ: (36) (سورہ انعام آیات نمبر 36) (36) (تو) تمہارا کہنا تو) صرف وہی لوگ ماننے ہیں جو (دل سے) سنا ہے اور مردوں کو تو خدا کرامت ہی میں اٹھاے گا پھر اسی کی طرف لوٹاے جائیں گے (36) (سورہ انعام آیات نمبر 36)

★ اَعْلَمُوا أَنَّمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَلَهُمْ وَزِينَةٌ وَتَفَاخُرٌ بَيْنَكُمْ وَتَكَاثُرٌ فِي الْأَمْوَالِ وَالْأَوْلَادِ كَمَثَلِ غَيْثٍ أَعْجَبَ الْكُفَّارَ نَبَاتُهُ ثُمَّ يَهِيجُ فَتَرَاهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَكُونُ حُطَامًا وَفِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ شَدِيدٌ وَمَغْفِرَةٌ مِّنَ اللَّهِ وَرِضْوَانٌ وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا مَتَاعُ الْغُرُورِ ﴿٣٥﴾ سَابِقُوا إِلَىٰ مَغْفِرَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا كَعَرْضِ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ

أَعَدَّتْ لِلَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ ذَلِكَ فَضْلُ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَن يَشَاءُ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ﴿٣٦﴾ مَا أَصَابَ مَن مُّصِيبَةٌ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي أَنْفُسِكُمْ إِلَّا فِي كِتَابٍ مِّن قَبْلِ أَن نَّبْرَأَهَا إِنَّ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ

﴿٣٧﴾ لِكَيْلَا تَأْسَوْا عَلَىٰ مَا فَاتَكُمْ وَلَا تَفْرَحُوا بِمَا آتَاكُمْ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُورٍ ﴿٣٨﴾ [سورة الحديد: آیت نمبر 20 تا 23]

ترجمہ: جان رکھو کہ دنیاوی زندگی محض کھیل اور تماشا اور جاہری جینت (و آساؤ) اور آپس میں ایک دوسرے پر فخر کرنا اور مال اور اولاد کی ایک دوسرے سے زیادہ خواہش ہے (دنیاوی زندگی کی میسال تو) بارش کی سی میسال ہے جس (کی وجہ) سے کسانوں کی خیتی (لہلہاتی اور) انکو خوش کر دیتی ہے پھر سڑ جاتی ہے تو تو اسکو دیکھتا ہے کہ جڑ ہو جاتی ہے پھر چر چر ہو جاتی ہے اور آخرت میں (کفار کے لیے) سخت عذاب ہے اور (مومنین کے لیے) خدا کی طرف سے بخشناسی اور خوشنودی اور دنیاوی زندگی تو بس فریب کا ساڑو سامان ہے (20) تم اپنے پروردگار کے (سبب) بخشناسی کی اور بہشت کی طرف لپک کے آگے بڑھ جاؤ جسکا ارج آسمان اور زمین کے ارج کے برابر ہے جو ان لوگوں کے لیے تیار کی گئی ہے جو خدا پر اور اس کے رسولوں پر ایمان لائے ہیں یہ خدا کا فضل ہے جسے چاہے اتنا کرے اور خدا کا فضل (و کرم) تو بہت بڑا ہے (21) جتنی موسباتیں رُخ زمین پر اور خود تو لوگوں پر نازل ہوتی ہیں (وہ سب) کبھل اس کے کہ ہم انہیں پیدا کریں کتاب (لوہ محفوز) میں (لکھی ہوئی) ہیں بے شک یہ خدا پر آسان ہے (22) تاکہ جب کوئی چیز تو سے جاتی رہے تو تو اسکا رنج نہ کیا کرو اور جب کوئی چیز (نعمت) خدا تو کو دے تو اس پر نہ اترایا کرو اور خدا کسی اترانے والے سے بھی باز کو دوست نہیں رکھتا (23) (سورہ تہٰن ہدیہ آیات نمبر 20 سے 23)

★ قَدْ أَفْلَحَ مَن تَزَكَّى ﴿٣٩﴾ وَذَكَرَ اسْمَ رَبِّهِ فَصَلَّى ﴿٤٠﴾ بَلْ تُؤْثِرُونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ﴿٤١﴾ وَالْآخِرَةَ خَيْرٌ وَأَبْقَى ﴿٤٢﴾ إِنَّ هَذَا لَفِي

الصُّحُفِ الْأُولَىٰ ﴿٤٣﴾ صُحُفِ إِبْرَاهِيمَ وَمُوسَىٰ ﴿٤٤﴾ [سورة الاعلى: آیت نمبر 14 تا 19]

ترجمہ: وہ یقیناً نر دلی کو پہنچا جو (شیرک سے) پاک ہو (14) اور اپنے پروردگار کا ذکر کرتا اور نماز پڑھتا رہا (15) مگر تو لوگ دنیاوی زندگی کو ترجیح دے رہے ہو (16) حالانکہ آخرت کبھی بہتر اور دیر پا ہے (17) بے شک یہی بات اگلے سہیفوں (18) ابراہیم اور موسیٰ کے سہیفوں میں بھی ہے (19) (سورہ اعلیٰ آیات نمبر 14 سے 19)

★ وَاللَّيْلِ إِذَا يَغْشَىٰ ﴿٤٥﴾ وَالنَّهَارِ إِذَا تَجَلَّىٰ ﴿٤٦﴾ وَمَا خَلَقَ الذَّكَرَ وَالْأُنثَىٰ ﴿٤٧﴾ إِنَّ سَعْيَكُمْ لَشَتَّىٰ ﴿٤٨﴾ فَأَمَّا مَن أُعْطِيَ وَاتَّقَىٰ ﴿٤٩﴾

وَصَدَّقَ بِالْحُسْنَىٰ ﴿٥٠﴾ فَسَنِيْسِرُهُ لِّلْیُسْرَىٰ ﴿٥١﴾ وَأَمَّا مَن بَخِلَ وَاسْتَغْنَىٰ ﴿٥٢﴾ وَكَذَّبَ بِالْحُسْنَىٰ ﴿٥٣﴾ فَسَنِيْسِرُهُ لِّلْعُسْرَىٰ ﴿٥٤﴾

وَمَا يُغْنِي عَنْهُ مَالُهُ إِذَا تَرَدَّىٰ ﴿٥٥﴾ إِنَّ عَلَيْنَا لَلْهُدَىٰ ﴿٥٦﴾ وَإِنَّ لَنَا لَلْآخِرَةَ وَالْأُولَىٰ ﴿٥٧﴾ فَأَنذَرْتُكُمْ نَارًا تَلَظَّىٰ ﴿٥٨﴾

لَا يَصْلُهَا إِلَّا الْأَشْقَى ﴿٥٩﴾ الَّذِي كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ﴿٦٠﴾ وَسَيُجَنَّبُهَا الْأَتْقَى ﴿٦١﴾ الَّذِي يُؤْتِي مَالَهُ يَتَزَكَّىٰ ﴿٦٢﴾ وَمَا لِأَحَدٍ

عِنْدَهُ مِن نِّعْمَةٍ تُجْزَىٰ ﴿٦٣﴾ إِلَّا ابْتِغَاءً وَجْهَ رَبِّهِ الْأَعْلَىٰ ﴿٦٤﴾ وَلَسَوْفَ يَرْضَىٰ ﴿٦٥﴾ [سورة الليل: آیت نمبر 1 تا 21]

ترجمہ: رات کی کسم جب (سورج کو) ڈھپا لے (1) اور دن کی کسم جب خوب روشن ہو (2) اور اس (جانت) کی جس نے نر و مادہ کو پیدا کیا (3) کہ بے شک تمہاری کوشش ترہ ترہ کی ہے (4) تو جس نے سجاوٹ کی اور اچھی بات (اسلام) کی تفسیر کی (5) تو ہم اس کے لیے راہت و آسانی (6) (جنت) کے اسباب مہیا کر دے گے (7) اور جس نے بخل کیا، اور بے پروائی کی (8) اور اچھی بات کو ڈھٹایا (9) تو ہم اسے سختی (جہنم) میں پہنچا دے گے، (10) اور جب وہ ہلاک ہوگا تو اسکا مال اس کے کچھ بھی کام نہ آئے گا (11) ہم نے راہ دکھا دینا ضرور ہے (12) اور آخرت اور دنیا (دونوں) خاص ہماری چیز ہیں (13) تو ہم نے تمہیں ہڈکتی ہوئی آگ سے ڈرا دیا (14) اس میں بس وہی داخل ہوگا جو بڑا بدبخت ہے (15) جس نے ڈھٹایا اور مٹھ لیا اور جو بڑا پرہیزگار ہے (16) وہ اس سے بچا لیا جائے گا (17) جو اپنا مال (خدا کی راہ) میں دے گا تاکہ پاک ہو جائے (18) اور لطف یہ ہے کہ کسی کا اس پر کوئی عہسان نہیں جسکا اسے بدلہ دیا جاتا ہے (19) بلکہ (وہ تو) صرف اپنے آسائش پروردگار کی خوشنودی حاصل کرنے کے لیے (دے گا) (20) اور وہ انکریب بھی خوش ہو جائے گا (21) (سورہ لیل آیات نمبر 1 سے 21)

★ وَقُلْ جَاءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ إِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوقًا ﴿٦٦﴾ وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْآنِ مَا هُوَ شِفَاءٌ وَرَحْمَةٌ

لِّلْمُؤْمِنِينَ وَلَا يَزِيدُ الظَّالِمِينَ إِلَّا خَسَارًا ﴿٦٧﴾ وَإِذَا أَنْعَمْنَا عَلَى الْإِنْسَانِ أَعْرَضَ وَنَأْمَنْتْ بِهِ وَإِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ

كَانَ يُوْسًا ﴿٦٨﴾ قُلْ كُلٌّ يَعْمَلُ عَلَىٰ شَاكِلَتِهِ فَرَبُّكُمْ أَعْلَمُ بِمَن هُوَ أَهْدَىٰ سَبِيلًا ﴿٦٩﴾

ترجمہ: اور (اے رسول) کہ دو کہ (دین) ہک آ گیا اور باتیل ناستناہد ہوا इसमें शक नहीं कि बातिल मिटने वाला ही था (81) और हम तो कुरान में वही चीज़ नाज़िल करते हैं जो मोमिनوں کے لیے (سراسر) شفاء اور رہمت ہے (مگر) نا فرمانوں کو تو غاٹے کے سیوا कुछ बढ़ाता ही नहीं (82) और जब हमने आदमी को नेअमत अता फरमाई तो (उल्टे) उसने (हमसे) मुँह फेरा और पहलू बचाने लगा और जब उसे कोई तकलीफ छू भी गई तो मायूस हो बैठा (83) (ऐ رسول) तुम कह दो कि हर (एक अपने तरीके पर कारगुज़ारी करता है फिर तुम में से जो शख्स बिल्कुल ठीक सीधी राह पर है तुम्हारा परवरदिगार (उससे) खूब वाकिफ है (84) (सूरह बनी इसराइल आयत नंबर 81 से 84)

★ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّا خَلَقْنَاهُ مِنْ ذَكَرٍ وَأُنْثَىٰ وَجَعَلْنَاهُ شُعُوبًا وَقَبَائِلَ لِتَعَارَفُوا ۚ إِنَّ أَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللَّهِ أَتْقَىٰ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ خَبِيرٌ ﴿١٣﴾ قَالَتِ الْأَعْرَابُ آمَنَّا قُلْ لَمْ تُؤْمِنُوا وَلَكِنْ قُولُوا أَسْلَمْنَا وَلَمَّا يَدْخُلِ الْإِيمَانُ فِي قُلُوبِكُمْ وَإِنْ تُطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ لَا يَلِتْكُمْ مِنْ أَعْمَالِكُمْ شَيْئًا ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١٤﴾ إِمَّا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ثُمَّ لَمْ يَرْتَابُوا وَجَاهَدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أُولَٰئِكَ هُمُ الصّٰدِقُونَ ﴿١٥﴾

[سورة الحجرات: 13 تا 15]

ترجمہ: لوگوں! ہم نے تو تم سب کو ایک مرد اور ایک اوریت سے پیدا کیا اور ہم ہی نے تمہارے کبیلے اور بیرادریاں بنائیں تاکہ ایک دوسرے کی شیناخت کرے इसमें शक नहीं कि खुदा के नज़दीक तुम सबमें बड़ा इज्जतदार वही है जो बड़ा परहेज़गार हो बेशक खुदा बड़ा वाकिफ़कार खबरदार है (13) अरब के देहाती कहते हैं कि हम ईमान लाए (ऐ رسول) तुम कह दो कि तुम ईमान नहीं लाए बल्कि (यूँ) कह दो कि इस्लाम लाए हालाँकि ईमान का अभी तक तुम्हारे दिल में गुज़र हुआ ही नहीं और अगर तुम खुदा की और उसके रसूल की फरमाबरदारी करोगे तो खुदा तुम्हारे आमाल में से कुछ कम नहीं करेगा - बेशक खुदा बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है (14) (सच्चे मोमिन) तो बस वही हैं जो खुदा और उसके रसूल पर ईमान लाए फिर उन्होंने उसमें किसी तरह का शक़ शुबह न किया और अपने माल से और अपनी जानों से खुदा की राह में जेहाद किया यही लोग (दावाए ईमान में) सच्चे हैं (15) (सुरहतुल हुजरात आयत नंबर 13 से 15)

★ إِنْ تَجْتَنِبُوا كَبَائِرَ مَا تُنْهَوْنَ عَنْهُ نُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَنُدْخِلْكُمْ مُدْخَلًا كَرِيمًا ﴿٣١﴾ وَلَا تَتَّبِعُوا مَا فَضَّلَ اللَّهُ بِهِ بَعْضَكُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ ۚ لِلرَّجَالِ نَصِيبٌ مِّمَّا اكْتَسَبُوا وَلِلنِّسَاءِ نَصِيبٌ مِّمَّا اكْتَسَبْنَ ۚ وَسَأَلُوا اللَّهَ مِنْ

فَضْلِهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ﴿٣٢﴾ [سورة النساء: 31 اور 32]

ترجمہ: जिन कामों की तुम्हें मनाही की जाती है अगर उनमें से तम गुनाहे कबीरा से बचते रहे तो हम तुम्हारे (सगीरा) गुनाहों से भी दरगुज़र करेंगे और तुमको बहुत अच्छी इज्जत की जगह पहुंचा देंगे (31) और खुदा ने जो तुममें से एक दूसरे पर तरजीह दी है उसकी हवस न करो (क्योंकि फ़ज़ीलत तो आमाल से है) मर्दों को अपने किए का हिस्सा है और औरतों को अपने किए का हिस्सा और ये और बात है कि तुम खुदा से उसके फज़ल व करम की ख्वाहिश करो खुदा तो हर चीज़ से वाकिफ़ है (32) (सुरहतुल निसा आयत नंबर 31 से 32)

★ وَالْعَصْرِ ﴿١﴾ إِنَّ الْإِنْسَانَ لَفِي خُسْرٍ ﴿٢﴾ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ ﴿٣﴾ [سورة العصر: آیت نمبر 1 تا 3]

ترجمہ: अस की कसम (1) बेशक इन्सान घाटे में है (2) मगर जो लोग ईमान लाए, और अच्छे काम करते रहे और आपस में हक़ का हुकम और सब्र की वसीयत करते रहे (3) (सुरहतुल अस आयत नंबर 1 से 3)

★ وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَصَعِقَ مَنْ فِي السَّهَابِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ إِلَّا مَنْ شَاءَ اللَّهُ ثُمَّ نُفِخَ فِيهِ أُخْرَىٰ ۚ فَإِذَا هُمْ قِيَامٌ يَنْظُرُونَ ﴿١٨﴾ وَأَشْرَقَتِ الْأَرْضُ بِنُورِ رَبِّهَا وَوُضِعَ الْكِتَابُ وَجِئَتْ بِالنَّبِيِّينَ وَالشُّهَدَاءِ وَقُضِيَ بَيْنَهُم بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿١٩﴾ وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَهُوَ أَعْلَمُ بِمَا يَفْعَلُونَ ﴿٢٠﴾ وَسِيقَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِلَىٰ جَهَنَّمَ زُمَرًا ۚ حَتَّىٰ إِذَا جَاءُوهَا فَتَحَتْ أَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا أَلَمْ يَأْتِكُمْ رُسُلٌ مِنْكُمْ يَتْلُونَ عَلَيْكُمْ آيَاتِ رَبِّكُمْ وَيُنْذِرُونَكُمْ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ هَٰذَا ۚ قَالُوا بَلَىٰ وَلَكِنْ حَقَّتْ كَلِمَةُ الْعَذَابِ عَلَى الْكَافِرِينَ ﴿٢١﴾ قِيلَ ادْخُلُوا أَبْوَابَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا فَبِئْسَ مَثْوًى الْمُتَكَبِّرِينَ ﴿٢٢﴾ وَسِيقَ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ إِلَى الْجَنَّةِ زُمَرًا ۚ حَتَّىٰ إِذَا جَاءُوهَا وَفُتِحَتْ أَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا سَلَامٌ عَلَيْكُمْ طِبْتُمْ فَادْخُلُوهَا خَالِدِينَ ﴿٢٣﴾ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي صَدَقَنَا وَعْدَهُ وَأَوْرَثَنَا الْأَرْضَ ۖ نَتَّبِعُوا مِنَ الْجَنَّةِ حَيْثُ نَشَاءُ ۖ فَنِعْمَ أَجْرُ الْعَامِلِينَ ﴿٢٤﴾ وَتَرَى الْمَلَائِكَةَ حَافِينَ مِنْ حَوْلِ الْعَرْشِ يُسَبِّحُونَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَقُضِيَ بَيْنَهُم بِالْحَقِّ وَقِيلَ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٢٥﴾

[سورة الزمر: آیت نمبر 68 تا 75]

بَيْنَهُمْ بِالْحَقِّ وَقِيلَ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٢٥﴾

तर्जुमा: और जब (पहली बार) सूर फँका जाएगा तो जो लोग आसमानों में हैं और जो लोग ज़मीन में हैं (मौत से) बेहोश होकर गिर पड़ेंगे) मगर (हाँ) जिस को खुदा चाहे वह अलबत्ता बच जाएगा) फिर जब दोबारा सूर फूँका जाएगा तो फौरन सब के सब खड़े हो कर देखने लगेंगे (68) और और पैगम्बर और गवाह ला हाज़िर किए जाएँगे और उनमें इन्साफ के साथ फैसला कर दिया जाएगा और उन पर (ज़री बराबर) जुल्म नहीं किया जाएगा (69) और जिस शख्स ने जैसा किया हो उसे उसका पूरा पूरा बदला मिल जाएगा, और जो कुछ ये लोग करते हैं वह उससे खूब वाकिफ है (70) और जो लोग काफिर थे उनके गोल के गोल जहन्नुम की तरफ हँकाए जाएँगे और यहाँ तक की जब जहन्नुम के पास पहुँचेंगे तो उसके दरवाज़े खोल दिए जाएँगे और उसके दरवाज़े उनसे पूछेंगे कि क्या तुम लोगों में के पैगम्बर तुम्हारे पास नहीं आए थे जो तुमको तुम्हारे परवरदिगार की आयतें पढ़कर सुनाते और तुमको इस रोज़ (बद) के पेश आने से डराते वह लोग जवाब देंगे कि हाँ (आए तो थे) मगर (हमने न माना) और अज़ाब का हुक्म काफिरों के बारे में पूरा हो कर रहेगा (71) (तब उनसे) कहा जाएगा कि जहन्नुम के दरवाज़ों में धँसो और हमेशा इसी में रहो गरज़ तकब्बुर करने वाले का (भी) क्या बुरा ठिकाना है (72) और जो लोग अपने परवरदिगार से डरते थे वह गिर्दों गिर्दा (गिरोह गिरोह) बेहिश्त की तरफ़ (एजाज़ व इकराम से) बुलाए जाएँगे यहाँ तक कि जब उसके पास पहुँचेंगे और बेहिश्त के दरवाज़े खोल दिये जाएँगे और उसके निगेहबान उन से कहेंगे सलाम अलैकुम तुम अच्छे रहे, तुम बेहिश्त में हमेशा के लिए दाखिल हो जाओ (73) और ये लोग कहेंगे खुदा का शुक्र जिसने अपना वायदा हमसे सच्चा कर दिखाया और हमें (बेहिश्त की) सरज़मीन का मालिक बनाया कि हम बेहिश्त में जहाँ चाहें रहें तो नेक चलने वालों की भी क्या खूब (खरी) मज़दूरी है (74) और (उस दिन) फरिश्तों को देखोगे कि अर्श के गिर्दा गिर्द घेरे हुए डटे होंगे और अपने परवरदिगार की तारीफ़ की (तसबीह) कर रहे होंगे और लोगों के दरमियान ठीक फैसला कर दिया जाएगा और (हर तरफ से यही) सदा बुलन्द होगी अल्हम्दुलिल्लाही रब्बिल आलमीन (75) (सुरहतुल अज जुमर आयत नंबर 68 से 75)

★ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي هَدَانَا لِهَذَا وَمَا كُنَّا لِنَهْتَدِيَ لَوْلَا أَنْ هَدَانَا اللَّهُ لَقَدْ جَاءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ

[سورة الاعراف : آیت نمبر 43] وَنُودُوا أَنْ تِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِي نُتِيبُهَا لِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٢٣﴾

तर्जुमा: और उन लोगों के दिल में जो कुछ (बुग़ज़ व कीना) होगा वह सब हम निकाल (बाहर कर) देंगे उनके महलों के नीचे नहरें जारी होगी और कहते होंगे शुक्र है उस खुदा का जिसने हमें इस (मंज़िले मक़सूद) तक पहुंचाया और अगर खुदा हमें यहाँ न पहुंचाता तो हम किसी तरह यहाँ न पहुंच सकते बेशक हमारे परवरदिगार के पैगम्बर दीने हक़ लेकर आये थे और उन लोगों से पुकार कर कह दिया जाएगा कि वह बेहिश्त हैं जिसके तुम अपनी कारगुज़ारियों की जज़ा में वारिस व मालिक बनाए गये हो (43) (सुरहतुल आराफ़ आयत नंबर 43)

[سورة الانبياء : آیت نمبر 23]

★ لَا يُسْأَلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ يُسْأَلُونَ ﴿٢٣﴾

तर्जुमा: जो कुछ वह करता है उसकी पूछगछ नहीं हो सकती (23) (सुरहतुल अंबिया आयत नंबर 23)